Item Code: 642 തിയ്യതി 17/1 Participant Code: 039

विषय : "मैं कौन हूँ"

मेरी पहचान

"मनु, विनु जल्दी आओ न, नाश्ता करो, और स्कूल जाने केलिए तैयार हो जाओ". रसोईघर से रमा ज़ोर से बोली।
"हाँ माँ, हम आ रहे हैं"।
रमा मनु और विनु की माँ है। वे दोनों जुड़वा भाईयाँ हैं। दसवीं कक्षा में पढ़ते हैं। अपनी बच्चे ही रमा का ताकत है।

"ये लड़के भी ना, अईने के अंदर डूबा है क्या, तैयार होने केलिए इतना वक्त क्यों लगा रहे हो"?
"माँ, हम तैयार हो चुके हैं।"
रमा को अलविदा बोलकर मनु और विनु स्कूल गए। उनका कमरा साफ़ करते समय बिखरे हुए किताबों के पन्ना वह खुशी से देखते थे। आसपास के लड़कियाँ वर्दी पहनकर स्कूल जाते समय भी वह उसको

~~समय~~ मशगूल होकर देखते थे।
बेचारी रमा, पढ़ने का सपना था। मगर
वो सपना तो सपना ही रह गए।
रमा बीहार की एक गाँव में पैदा हुई थी।
उसका बाप एक चोर था। सदा समय
पुलिस थाने में गिरफ्त थे। जब भी घर
आते थे, शराब पीकर झगड़ा करते थे।
और उसकी माँ .... वह तो अपना शरीर ही
~~मर्द~~ मर्दों को बेचकर आजीविका कमाती थी।
रमा लड़की होने पर उसकी माँ बहुत खुश
थे। अब तो बेटी का भी व्यापार करते हैं।
उस गाँव में लड़कियाँ स्कूल नहीं जाते
थे। वह सिर्फ लड़कों का ही हक थे।
रमा पढ़ने के लिए बहुत चाहती थी।
मगर वह सपना अधूरा ही रह गई।
जब भी वे गाँव की रास्ते से चलते,
गाँववालें उसे परेशान करते थे।
"अरे देखो, चोर की बेटी आ रही है।"
"ऐसा मत कहो भैया, किसी और के भी
बेटी हो सकती है, ये तो उसकी माँ भी

64-ാമത് കേരള സ്കൂൾ കലോത്സവം 2026 ജനുവരി 14 - 18 - തൃശ്ശൂർ

Item Code: 642 Participant Code: 039

64-ാമത് കേരള സ്കൂൾ കലോത്സവം, തൃശ്ശൂർ ★ പ്രോഗ്രാം കമ്മിറ്റി ★ തിയ്യതി 17/1

कह नहीं सकती।" रमा रोती थी।
इन सब मुश्किलों और अपने माँ से बचने
के लिए रमा अपने आशिक के साथ
भाग गई। बेबस थे। लेकिन क्या करें।
'करेले के ~~अपने~~ ऊपर नीम चढ़ा'।
उस दंपति का मोहब्बत ज़्यादा दिन नहीं
हे चले। एक दिन रात को उसकी पति
ने उसे छोड़कर चला गया। लेकिन वह
जाने से पहले रमा को एक तोफ़ा देकर
गया था।

रमा हौसला नहीं छोड़ी। वह अपने
होने वाले बच्चों के लिए जीना शुरु किया,
बहुत दर्द सहे और दो बच्चों की माँ बनी।
घरों में काम कर कर बच्चों का देखभाल
किया।

रमा अपनी चिंता से बाहर आई।
'मैं कौन हूँ - सिर्फ एक घरेलु औरत.
जो अपढ़ित और बेबस है। मन में किसी
कोने में पढ़ने का चाहत तो है, अब भी
मगर... इस उम्र में - कैसे?'

"माँ, हम आए हैं।" मनु और विनु का आवाज़ उसे वर्तमान काल में वापस ले आए।

"आ गए मेरे बच्चों" आँसू को छिपाते हुए रमा बोली।

"माँ, आप उदास हैं क्या?"

"नहीं, तुम बताओ स्कूल में क्या-क्या हुआ"।

"नहीं माँ, पहले आप बताओ आप क्यों दुखी हैं।" मनु बोला।

"मैं भी पढ़ना चाहता हूँ बच्चों, लेकिन अब तो नहीं होगा न!"

"अरे बस इतनी सी बात है"।

"बगल में छोरा, और शहर में ढिंढोरा"। विनु हँसकर कहा।

"ये तुम क्या कह रहे हो मनु विनु?"

"माँ आज स्कूल में एक औरत आई और वे स्त्रीशक्तिकरण के सिलसिले में औरतों को मुफ्त में सिखाती हैं।

"और यह तो हमारे घर से बहुत पास है, करीब

उस औरत ने अपना नंबर भी दिया है। अब तो आपका सपना ज़रूर पूरा हो जाएगी।"

रमा भी वहाँ गई। वे पढ़ना और लिखना सीख लिया। घरों में काम करने के साथ पढ़ी। उसकी प्रकटन और होशियारी से वहाँ की शिक्षकों ने प्रभावित होकर यु.पी.एस.सी परीक्षा के लिए नाम निर्देशन किया। रमा तो इस सब से अनजान थी।

फिर भी वाकई में रमा बहुत मेहनत की।

दिन, हफ्ते और महिने बीत गए।

मनु और विनु अपने दसवीं की परीक्षा लिखे जबकि रमा; अपनी यु.पी.एस.सी. लिखी।

रिसल्ट आए। मनु और विनु अच्छे मार्क्स के साथ पास होगए और **रमा भी**। अब रमा कलक्टर बन चुकी थी। अपने जिल्ले की, जहाँ लोगों ने उसे

64-ാമത് കേരള സ്കൂൾ കലോത്സവം തിയ്യതി 17/1 പ്രോഗ്രാം കമ്മിറ്റി

झेड़ती थी, और उसकी मज़ाक उड़ाते थे। उसने वहाँ की लड़कियों और औरतों के लिए बहुत पहल शुरू किए। प्रधान-मंत्री से पुरस्कार जीते।

"यह मईने में रह नहीं रखते की हमारा माँ-बाप कौन है, हम कहाँ पैदा होगए या हमारी अतीत-बल्कि ये मईने में रखते हैं कि ज़िंदगी की चुनौतियों को हमने सामना कैसे की, आज हम कौन है। ज़िंदगी में में जीतने के लिए कुछ बातें छोड़नी पड़ती है। अगर इरादा और सपना पक्की हो, रास्ता सही हो, तो कोई भी मेहनत करके उस ख्वाईश पूरी कर सकता है..."

जब मंजन में खड़े होकर वे बात की तब भरपूर सदस्यों ने उसे ज़ोर से तालियाँ थी।

उस दिन रमा को अपने सवाल का जवाब मिल चुकी थी।

मैं कौन हूँ ?
'मैं - एक औरत हूँ जो - हौसला, परिश्रम, और दृढनिश्चय से खुद की पहचान बनाई है। अपना ज़िंदगी बदल दिया है, साथ में तकदीर को भी। मैं मिसाल हूँ, सबके लिए। मैं वही हूँ जो अभी भी दुनिया में बदलाव ला सकती हूँ। मैं वह रोशनी हूँ जो अंधेरा को दूर कर सकता है, मैं उन सब का प्रतीक हो जो अपने और लोगों का ज़िंदगी बदली हो। और साथ - के साथ एक माँ भी।'

आज चाहे कितने भी लोग, भीड़ या इस पूरी दुनिया ने मुझसे पूछे कि 'मैं कौन हूँ?' तो, अभिमान से, मैं जोर से बोलूँगी कि -
"मैं - मैं हूँ"...

रमा की आँखें भर गई थी। इस वक्त, अपनी बदकिस्मती से उदास होकर

नहीं, बल्कि उसकी नज़दीक को पलटने की खुशी की आँसू ....
अब रमा अतीत का कैदी नहीं रहे।
वह परिवर्तन की प्रतीक है।

उसकी बात सुनकर वहाँ की हर औरतों और लड़कियों के मन में एक सवाल उड रहे थे।
"मैं कौन हूँ और क्या बनूँगी।"

रमा अपनी सारे ख्वाइशे पूरी कर चुकी थी। अब वह खुश है और दूसरों को उनका सपना पूरा करने की मदद देती है।

समाप्त